

2. शास्त्रम्	
3. मूर्ख	
उत्तरम्-	
I. 1. वैद्यः 2. उदकम् 3. गणिकाः 4. त्रयः	
II. 1. ते महाविषाः सन्ति—वातिकाः, पैतिकाः, श्लैष्मिकाः च इति।	
 गणिका परिव्राजकस्य (संन्यासिनः) जीवात्मना/जीवेन आविष्टा, अतः सा संन्यासिनः स्वरेण वदिति। 	
III. (क) 1. गणिका प्रेतेन आविष्टा 2. तृतीया, एकवचनम् 3. विश् धातुः, आ उपसर्गः	
(ख) मया-यह सर्वनाम है, यद्यपि सभी पद तृतीयान्त हैं।	
(ग) 1. पैतिका : + पव (: श्) 2. न + अधिगम्यते (प्राप्यते)	
(घ) 1. संन्यासिन: संन्यासिन् पुल्लिंगम् षष्ठी एकवचनम्	
2. शास्त्रम् शास्त्र नपुंसकलिंगम् द्वितीया एकवचनम् 3. मूर्ख मूर्ख पुॅल्लिंगम सम्बोधनम् एकवचनम्	
(2) अधोदत्तस्य श्लोकस्य अन्वयं कुरुत तदाधारित-प्रश्नान् च उत्तरत—(निम्नलिखित श्लोक का	
अन्वय पूरा कीजिए और उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-)	
शिवमस्तु सर्वजगतां परहितनिरता भवन्तु भूतगणाः।	
दोषाः प्रयान्तु नाशं सर्वत्र सुखी भवतु लोकः।।	
(अ) अन्वयपूर्ति कुरुत-(अन्वय पूरा कीजिए-)	
सर्वजगतां अस्तु, भूतगणाः परहितनिरताः दोषाः नाशम् लोकः	
सुखी भवतु। (सर्वत्र, भवन्तु, प्रयान्तु, क्रीशवम्)	
(तपन), नपन्तु, अपानु, अपान्त्र) I. एकपदेन उत्तरत।	
1. सर्वजगता किम् अस्तु?	
2. भूतगणा:/प्राणिगणा: की दृशा: भवन्तु?	
II. पूर्णवाक्येन उत्तरत।	
1. दोषाः किं कुर्वन्तु?	
2. लोक: कीदृश: भवतु?''''	
III. भाषिककार्यम्—	
(क) 'सर्वत्र सुखी भवतु लोकः' इति श्लोकांशे—	
1. 'भवतु' क्रियापदस्यं कर्त्ता क:?	
2. अत्र किम् अव्ययपदम्?	
3. 'लोकः' इति पदस्य कि विशेषणम् अत्र प्रयुक्तम्?	
भवतु-अत्रः कः धातुः कः च लकारः?	
(ख) यथानिर्देशम् रिक्तस्थानानि पूरयत	

	1. भवतु	(द्वि.व.)	(ৰ.ব.)	
	2. अस्तु —	(द्वि.व.) —	(ब.व.)	
		(द्वि.व.)	(ब.व.)	
	9	अस्य कः विपर		
	•	भस्य कः पर्यायः?		
	•	/(\1 4/• 1313•·		
उत्तरम्-		गणान गर्नन।		
) शिवम्, भवन्तु,		will be a firm	
) I 1. शिवम्		. परिहितनिरताः	
		•	. लोक: सर्वत्र सुखी भ	
П			3. सुखी 4. भू	्धातुः लाट् लकारः
	(ख) 1. भव	तु भवताम्	भवन्तु	
	2. अस्	तु स्ताम्	सन्तु	
	3. सुख	î। सुखिनौ	सुखिन:	
	4. गुण	दोषा:		
(3		पदं चिनुत —(भिन्न प्र	कृति का पद चुनिए।)	
•		भगवन्, भगवान्, रामित		
		त्रश, तिष्ठ, जानासि।		
		, नाशम्, उदकम्, आश्च	ार्यम।	
		ष्टा, गुलिका:, कुठारिक		
7 - 770_		- (शेष सम्बोधन पद्है		
ડતારમ્-	० जानामि .	(श्रेष्ठ आनार्थकलोट	लकार-पद है।)	
	3 नाष्ट्राम	– (शेष नपुंसकर्लिंग पद	हैं।)	
	4. गलिकाः	- (शेष एकवचन पद ह	(E)	
(4		ा कुरुत —(सन्धि अथवा		
	1. न + एव =	-	2. भवन्त्येते =	+
			`	_
	3. ાન: + જ્ઞાન્ત	: =	4. वसन्तर्सना + इयर	1 =
		: = त: = +	4. वसन्तसेना + इयग 6. उत्थितैषा =	
उत्तरम्-		तः = +		+
	 रुद्राक्षग्रहणोचि नैव रुद्राक्षग्रहण+ 	त: = + 2. भवन्ति + एते उचित: 6. उत्थिता + एषा	6. उत्थितैषा = 3. निष्क्रान्तः	 4. वसन्तसेनेयम्
	 रुद्राक्षग्रहणोचि नैव रुद्राक्षग्रहण+ 	त: = + 2. भवन्ति + एते	6. उत्थितैषा = 3. निष्क्रान्तः	 4. वसन्तसेनेयम्
	 रुद्राक्षग्रहणोचि नैव रुद्राक्षग्रहण+ अधोदत्तानि पव कीजिए-) 	त: = +	6. उत्थितेषा = 3. निष्क्रान्त: वयत—(निम्नलिखित वाक्य	
(5	 रुद्राक्षग्रहणोचि नैव रुद्राक्षग्रहण+ अधोदत्तानि पव कीजिए-) परिव्राजक: 	त: = +	6. उत्थितैषा = 3. निष्क्रान्तः व्ययत—(निम्नलिखित वाक्य 3. सुखी	
(5	 रुद्राक्षग्रहणोचि नैव रुद्राक्षग्रहण+ अधोदत्तानि पव कीजिए-) परिव्राजक: परिव्राजक: 	त: = +	6. उत्थितैषा = 3. निष्क्रान्तः व्ययत—(निम्नलिखित वाक्य 3. सुखी	
(5	 रुद्राक्षग्रहणोचि नैव रुद्राक्षग्रहण+ अधोदत्तानि पव कीजिए—) परिव्राजक: परिव्राजक: परिव्राजक संन्या 	त: = +	6. उत्थितैषा = 3. निष्क्रान्तः व्ययत—(निम्नलिखित वाक्य 3. सुखी	
(5	 रुद्राक्षग्रहणोचि नैव रुद्राक्षग्रहण+ अधोदत्तानि पव कीजिए-) परिव्राजक: परिव्राजक: परिव्राजक: गणिका संन्या लोक: सर्वत्र 	त: = +	6. उत्थितैषा = 3. निष्क्रान्तः व्ययत—(निम्नलिखित वाक्य 3. सुखी	
(5	 रुद्राक्षग्रहणोचि नैव रुद्राक्षग्रहण+ अधोदत्तानि पव कीजिए—) परिव्राजक: परिव्राजक: परिव्राजक संन्या 	त: = +	6. उत्थितैषा = 3. निष्क्रान्तः व्ययत—(निम्नलिखित वाक्य 3. सुखी	
(5	 रुद्राक्षग्रहणोचि नैव रुद्राक्षग्रहण+ अधोदत्तानि पव कीजिए-) परिव्राजक: परिव्राजक: परिव्राजक: गणिका संन्या लोक: सर्वत्र 	त: = +	6. उत्थितेषा = 3. निष्क्रान्तः व्ययत—(निम्नलिखित वाक्य 3. सुखी अस्तु'।	
<i>(5</i> ंउत्तरम्–	 रुद्राक्षग्रहणोचि नैव रुद्राक्षग्रहण+ अधोदत्तानि पव कीजिए-) परित्राजक: परित्राजक: परित्राजक: गणिका संन्या लोक: सर्वत्र <u>भवान</u> कुत्र ग 	त: = +	6. उत्थितैषा = 3. निष्क्रान्तः वयत—(निम्निलिखित वाक्य 3. सुखी अस्तु'।	 4. वसन्तसेनेयम् ों का वाक्यों मे प्रयोग 4. भवान्
<i>(5</i> ंउत्तरम्–	5. रुद्राक्षग्रहणोचि 1. नैव 5. रुद्राक्षग्रहण+) अधोदत्तानि पव कीजिए—) 1. परिव्राजक: 1. <u>परिव्राजक:</u> 2. गणिका संन्या 3. लोक: सर्वत्र 4. <u>भवान</u> कुत्र ग	तः = +	6. उत्थितैषा = 3. निष्क्रान्तः वयत—(निम्निलिखित वाक्य 3. सुखी अस्तु'।	 4. वसन्तसेनेयम् ों का वाक्यों मे प्रयोग 4. भवान्
<i>(5</i> ंउत्तरम्–	5. रुद्राक्षग्रहणोचि - 1. नैव - 5. रुद्राक्षग्रहण+ - अधोदत्तानि पव कीजिए—) - 1. परित्राजक: - 1. परित्राजक: - 2. गणिका संन्या - 3. लोक: सर्वत्र - 4. <u>भवान</u> कुत्र ग	त: = +	6. उत्थितेषा = 3. निष्कान्तः व्ययत—(निम्निलिखित वाक्य 3. सुखी अस्तु'। वियप्रश्नाः विप्रपूर्णि कुरुत—(दिए गए	 4. वसन्तसेनेयम् ों का वाक्यों मे प्रयोग 4. भवान्
<i>(5</i> ंउत्तरम्–	5. रुद्राक्षग्रहणोचि - 1. नैव 5. रुद्राक्षग्रहण+ -) अधोदत्तानि पव कीजिए-) 1. परित्राजक: - 1. परित्राजक: - 2. गणिका संन्या 3. लोक: सर्वत्र 4. <u>भवान</u> कुत्र ग - प्रवत्तविकल्पेभ्य: चुनकर वाक्यपूर्ति 1. अलम्	त: = +	 उत्थितैषा = तिष्कान्तः वयत-(निम्निलिखित वाक्य सुखी अस्तु'। गियप्रश्नाः यपूर्ति कुरुत-(दिए गए गिरश्रमेण)	 4. वसन्तसेनेयम् ों का वाक्यों मे प्रयोग 4. भवान्
<i>(5</i> ंउत्तरम्–	5. रुद्राक्षग्रहणोचि 1. नैव 5. रुद्राक्षग्रहण+ 7 अधोदत्तानि पव कीजिए—) 1. परित्राजक: 2. गणिका संन्या 3. लोक: सर्वत्र 4. <u>भवान</u> कुत्र ग 7 प्रवत्तविकल्पेभ्य: चुनकर वाक्यपूर्ति 1. अलम् 2. कथा	तः = +	 तिस्थतेषा = तिष्कान्तः वयत-(निम्निलिखित वाक्य सुखी अस्तु'। वयपूर्ति कुरुत-(दिए गए रिश्रमेण) यम्, इदम, अयम)	 4. वसन्तसेनेयम् ों का वाक्यों मे प्रयोग 4. भवान्
<i>(5</i> ंउत्तरम्–	5. रुद्राक्षग्रहणोचि 1. नैव 5. रुद्राक्षग्रहण+ 7) अधोदत्तानि पव कीजिए—) 1. परित्राजक: 1. परित्राजक: 2. गणिका सन्या 3. लोक: सर्वत्र 4. भवान् कुत्र ग ग्रदत्तविकल्पेभ्य: चुनकर वाक्यपूर्ति 1. अलम् 2. कथा 3. वैद्य:	तः = +	6. उत्थितेषा = 3. निष्कान्तः वयत—(निम्नलिखित वाक्य 3. सुखी अस्तु'। वयपूर्ति कुरुत—(दिए गए विश्रमेण) वम्, इदम, अयम) वकम्, गुलिकाः)	 4. वसन्तसेनेयम् ों का वाक्यों मे प्रयोग 4. भवान्
<i>(5</i> ंउत्तरम्–	5. रुद्राक्षग्रहणोचि 1. नैव 5. रुद्राक्षग्रहण+) अधोदत्तानि पव कीजिए—) 1. परित्राजक: 1. परित्राजक: 3. लोक: सर्वत्र 4. <u>भवान</u> कुत्र ग) प्रवत्तविकल्पेभ्य: चुनकर वाक्यपूर्ति 1. अलम् 2. कथा 3. वैद्य: 4. मह्मम्	तः = +	6. उत्थितेषा = 3. निष्कान्तः वयत-(निम्निलिखित वाक्य 3. सुखी अस्तु'। वपूर्ति कुरुत-(दिए गए विश्रमेण) यम्, इदम, अयम) तकम्, गुलिकाः) , शतम्, शतान्)	 4. वसन्तसेनेयम् ों का वाक्यों मे प्रयोग 4. भवान्
<i>(5</i> ंउत्तरम्–	5. रुद्राक्षग्रहणोचि 1. नैव 5. रुद्राक्षग्रहण+) अधोदत्तानि पव कीजिए—) 1. परित्राजक: 2. गणिका संन्या 3. लोक: सर्वत्र 4. <u>भवान</u> कुत्र ग) प्रदत्तविकल्पेभ्य: चुनकर वाक्यपूर्ति 1. अलम् 2. कथा 3. वैद्य: 4. मह्यम् 5. विनम्	तः = +	6. उत्थितैषा = 3. निष्कान्तः वयत—(निम्निलिखित वाक्य 3. सुखी अस्तु'। वपूर्ति कुरुत—(दिए गए गिश्रमेण) यम्, इदम, अयम) तकम्, गुलिकाः) , शतम्, शतान्) नी, ज्ञानिनः)	
<i>(5</i> ंउत्तरम्–	5. रुद्राक्षग्रहणोचि - 1. नैव 5. रुद्राक्षग्रहण+ 7) अधोदत्तानि पव कीजिए-) 1. परित्राजक: - 1. परित्राजक: - 2. गणिका संन्या 3. लोक: सर्वत्र 4. भवान कुत्र ग 7. अलम् 2. कथा 3. वैद्य: 4. मह्मम् 5. विनम् 6. तस्य	तः = +	6. उत्थितेषा = 3. निष्कान्तः वयत—(निम्निलिखित वाक्य 3. सुखी अस्तु'। वपूर्ति कुरुत—(दिए गए विश्रमेण) वम्, इदम, अयम) तकम्, गुलिकाः) , शतम्, शतान्) नी, ज्ञानिनः) (शिल्पनः, शिल्पस्य, शि	
<i>(5</i> ंउत्तरम्–	5. रुद्राक्षग्रहणोचि 1. नैव 5. रुद्राक्षग्रहण+ 7) अधोदत्तानि पव कीजिए—) 1. परित्राजक: 2. गणिका संन्या 3. लोक: सर्वत्र 4. <u>भवान</u> कुत्र ग 7. यत्विकल्पेभ्यः चुनकर वाक्यपूर्ति 1. अलम् 2. कथा 3. वैद्यः 4. मह्मम् 5. विनम् 6. तस्य 7. याचक:	तः = +	6. उत्थितेषा = 3. निष्कान्तः वयत—(निम्निलिखित वाक्य 3. सुखी अस्तु'। वियुष्क्रश्नाः यपूर्ति कुरुत—(दिए गए रिश्रमेण) यम्, इदम, अयम) तकम्, गुलिकाः) , शतम्, शतान्) नी, ज्ञानिनः) (शिल्पनः, शिल्पस्य, शि	
<i>(5</i> ंउत्तरम्–	5. रुद्राक्षग्रहणोचि 1. नैव 5. रुद्राक्षग्रहण+ 7) अधोदत्तानि पव कीजिए—) 1. परित्राजक: 2. गणिका संन्या 3. लोक: सर्वत्र 4. भवान् कुत्र ग 7. अलम् 2. कथा 3. वैद्य: 4. मह्मम् 5. विनम् 6. तस्य 7. याचक: 8. सेवका:	तः = +	6. उत्थितेषा = 3. निष्कान्तः वयत-(निम्नलिखित वाक्य 3. सुखी अस्तु'। व्यपूर्ति कुरुत-(दिए गए विश्रमेण) वम्, इदम, अयम) तकम्, गुलिकाः) व, शतम्, शतान्) नी, ज्ञानिनः) (शिल्पनः, शिल्पस्य, शि धनी, धनिनम्) म्, स्वामिनम्, स्वामिनः)	
<i>(5</i> ंउत्तरम्–	5. रुद्राक्षग्रहणोचि 1. नैव 5. रुद्राक्षग्रहण+ 7) अधोदत्तानि पव कीजिए—) 1. परित्राजक: 3. एरित्राजक: 3. एरित्राजक: 4. भवान् कुत्र ग 7. अलम् 2. कथा 3. वैद्य: 4. मह्मम् 5. विनः 6. तस्य 7. याचक: 8. सेवका: 9. एरें विवः	तः = +	6. उत्थितेषा = 3. निष्कान्तः वयत-(निम्नलिखित वाक्य 3. सुखी अस्तु'। व्यपूर्ति कुरुत-(दिए गए विश्रमेण) वम्, इदम, अयम) वकम्, गुलिकाः) व, शतम्, शतान्) नी, ज्ञानिनः) (शिल्पनः, शिल्पस्य, शि धनी, धनिनम्) म्, स्वामिनम्, स्वामिनः) लितकाः, लितके)	4. वसन्तसेनेयम् तं का वाक्यों मे प्रयोग 4. भवान् विकल्पों में से उचित पद
(5 उत्तरम्-	5. रुद्राक्षग्रहणोचि 1. नैव 5. रुद्राक्षग्रहण+) अधोदत्तानि पव कीजिए—) 1. परित्राजक: 1. परित्राजक: 3. लोक: सर्वत्र 4. <u>भवान</u> कुत्र ग) प्रवत्तविकल्पेभ्य: चुनकर वाक्यपूर्ति 1. अलम् 2. कथा 3. वैद्य: 4. मह्मम् 5. विनग्नः 6. तस्य 7. याचक: 8. सेवका: 9. ! त्व 10. प्रबन्धक:	तः = +	6. उत्थितैषा = 3. निष्कान्तः वयत—(निम्निलिखित वाक्य 3. सुखी अस्तु'। वपूर्ति कुरुत—(दिए गए विश्रमेण) यम्, इदम, अयम) तकम्, गुलिकाः) , शतम्, शतान्) नी, ज्ञानिनः) (शिल्पनः, शिल्पस्य, शि धनी, धनिनम्) म्, स्वामिनम्, स्वामिनः) लितकाः, लितके) ोन्, कर्मचारिणान्, कर्मचारि	 + 4. वसन्तसेनेयम् गें का वाक्यों मे प्रयोग 4. भवान् विकल्पों में से उचित पद ल्पिन्)
(5 उत्तरम्-	5. रुद्राक्षग्रहणोचि 1. नैव 5. रुद्राक्षग्रहण+ 7) अधोदत्तानि पव कीजिए-) 1. परित्राजक: 2. गणिका संन्या 3. लोक: सर्वत्र 4. <u>भवान</u> कुत्र ग 7. याचक: 8. सेवका: 9. प्रबन्धक: 1. प्रिश्रमेण	तः = +	6. उत्थितैषा = 3. निष्कान्तः वयत—(निम्निलिखित वाक्य 3. सुखी अस्तु'। वपूर्ति कुरुत—(दिए गए रिश्रमेण) यम्, इदम, अयम) तकम्, गुलिकाः) , शतम्, शतान्) नी, ज्ञानिनः) (शिल्पनः, शिल्पस्य, शि धनी, धनिनम्) म्, स्वामिनम्, स्वामिनः) लतिकाः, लतिके) ोन्, कर्मचारिणान्, कर्मचारि 3. गुलिकाः	 +
(5 उत्तरम्-	5. रुद्राक्षग्रहणोचि 1. नैव 5. रुद्राक्षग्रहण+) अधोदत्तानि पव कीजिए—) 1. परित्राजक: 1. परित्राजक: 3. लोक: सर्वत्र 4. <u>भवान</u> कुत्र ग) प्रवत्तविकल्पेभ्य: चुनकर वाक्यपूर्ति 1. अलम् 2. कथा 3. वैद्य: 4. मह्मम् 5. विनग्नः 6. तस्य 7. याचक: 8. सेवका: 9. ! त्व 10. प्रबन्धक:	तः = +	6. उत्थितैषा = 3. निष्कान्तः वयत—(निम्निलिखित वाक्य 3. सुखी अस्तु'। वपूर्ति कुरुत—(दिए गए विश्रमेण) यम्, इदम, अयम) तकम्, गुलिकाः) , शतम्, शतान्) नी, ज्ञानिनः) (शिल्पनः, शिल्पस्य, शि धनी, धनिनम्) म्, स्वामिनम्, स्वामिनः) लितकाः, लितके) ोन्, कर्मचारिणान्, कर्मचारि	 +

(2) कथनस्थ शुद्ध भावं चिनुत-(कथन का शुद्ध भाव चुनिए-)

(क) परहितनिरताः भवन्तु भूैतगणाः।

- (i) प्रेतगणाः परोपकारं कुर्वन्तु।
- (ii) सर्वे जना: प्रेतगणानाम् उपकारं कुर्वन्ति।
- (iii) सर्वे प्राणिन: परोपकारं कुर्वन्तु।

(ख) अये! अयमत्रभवान् योगी परिव्राजकः क्रीडति।

- (i) योगी संन्यासी उद्याने क्रीडारत: अस्ति।
- (ii) यमपुरुष: परिव्राजकं दृष्ट्वा विस्मित: वदित च 'किं भवान क्रीडित?"
- (iii) गणिकां परिव्राजकवत् आचरित इति वीक्ष्य यमपुरुषः जानाति यत् गणिकायाः शरीरे परिव्राजकस्य जीवात्मा अस्ति, अत एव एष लीला भवति।

उत्तरम्- (क) सर्वे प्राणिन: परोपकारं कुर्वन्तु।

(ख) गणिका परिव्राजकवत् आचरित इति वीक्ष्य यमपुरुषः जानाति यत् गणिकायाः शरीरे परिव्राजकस्य आत्मा अस्तिः अत एव एषा लीला भवति।

******* END *******